विचार बिन्दु

मन की दुर्बलता से भयंकर और कोई पाप नहीं। –विवेकानंद

क्रिकेट में अब स्टाइल, तकनीक व कलात्मकता नहीं रही

क्रिकेट, जो परंपरा से जुड़ा खेल माना जाता रहा है, वह अब पूरी तरह बदल गया है। अब उसे कोई 'जेन्टलमैन्स गेम' भी नहीं कहता। क्रिकेट अब कला का नहीं ताकत का प्रदर्शन है। इस रविवार को जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग के बैंगलुरु और जयपुर के बीच मैच में यही देखने को मिला। क्रिकेट के लंबे टेस्ट मैचों में अब किसी की दिलचस्पी नहीं रह गई है और न किसी के पास इतना धैर्य और समय है कि पांच दिनों तक खेल का आनंद लिया जा सके और खेल की तकनीक और शुद्धता को सराहा जा सके। टेस्ट क्रिकेट में धैर्य, मानसिक मजबूती और रणनीति की परीक्षा होती थी। स्पिन गेंदबाज़ी, टाइमिंग, और 'वेट एंड वॉच' शैली का बोलबाला था। उस दौर में खिलाड़ी सिर्फ़ रन बनाने के लिए नहीं, बल्कि क्रिकेट को एक कला की तरह निभाने के लिए जाने जाते थे। आज के क्रिकेट में, खासतौर पर टी20 फॉर्मेट में, ताकत और तेज़ी का बोलबाला है। बड़े-बड़े छक्के, हेलीकॉप्टर शॉट्स, और स्लॉग स्वीप जैसे ताकतवर स्ट्रोक आम हो गए हैं। बल्लेबाज़ी में ज्यादा 'हिटिंग पावर' और फिटनेस की जरूरत है। गेंदबाज़ी में भी स्पीड और वैरिएशन ज़रूरी हो गया है। फील्डिंग का स्तर भी ऐसा हो चला है कि जहां हर खिलाड़ी को सुपरमैन जैसा बनना पड़ता है। जिम ट्रेनिंग, न्यूट्रिशन और फिटनेस कल्चर का भी इसमें आ गया है और क्रिकेट के खिलाड़ी अब मानो एथलीट बन गए हैं। आज के क्रिकेट कोच भी खिलाड़ी को रैपिड स्कोरिंग और पॉवर हिटिंग पर ट्रेन करते हैं। स्टाइलिस्ट बल्लेबाज़ी की जगह अब फंक्शनल बैटिंग सिखाई जाती है। अब हर खिलाड़ी के पास डेटा एनालिस्ट, स्ट्रेंथ ट्रेनर, और परफ़ॉर्मेंस कोच होते हैं, जो शुद्ध सौंदर्य से ज़्यादा नतीजों पर ध्यान देते हैं। यह क्रिकेट में आया ऐसा बदलाव है जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी। यह बदलाव एक भूचाल की तरह आया था जिसने समूचे खेल का चरित्र बदल कर रख दिया। अब तो लोग भूल ही गये हैं कि इस बदलाव का उत्प्रेरक ऑस्ट्रेलियाई मीडिया दिग्गज केरी पैकर था जिसने 'वर्ल्ड सीरीज क्रिकेट' शुरू करके एक ऐसी क्रांति रच दी जिसने क्रिकेट को नए रूप में स्थापित ही नहीं किया बल्कि इसके भविष्य को भी नये सिरे से परिभाषित और मनोरंजन का एक नया बाजार खड़ा कर दिया। पैकर का क्रिकेट में प्रवेश ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट मैचों के लिए विशेष प्रसारण अधिकार हासिल करने की उसकी महत्वाकांक्षा से शुरू हुआ था। स्थापित क्रिकेट प्रतिष्ठान से प्रतिरोध का सामना करते हुए, उसने 1977 में अपनी खुद की 'वर्ल्ड सीरीज क्रिकेट' प्रतियोगिता शुरू कर एक महत्वाकांक्षी कदम उठाया। इस कदम से क्रिकेट जगत में न केवल हलचल मच गई, बल्कि इस खेल के प्रतिमान ही बदल दिये जिसका नतीजा हम आज टी20 जैसे मैचों में देख रहे हैं। केरी पैकर क्रांति ने क्रिकेट पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी, जिसने खेल को खेलने, देखने और उससे पैसा कमाने के तरीके को मौलिक रूप से बदल दिया और क्रिकेट 'जेन्टलमेन्स गेम' नहीं रहा, वह पूर्णत: व्यावसायिक हो गया। खिलाड़ियों के लिये जो कभी अंशकालिक काम था, वह उनका एक व्यवहार्य कैरियर विकल्प बन गया। अब तो टीमों के लिए खिलाड़ियों की खरीद की जाती है। खिलाड़ियों को नये मिले प्रचार ने उन्हें सेलिब्रिटी की ऊंचाइयां प्रदान की। इससे खेल पर हुआ असर सबके सामने है। पिछले जमाने में सुबह से शाम तक पांच दिन, बीच में एक दिन छुट्टी, और दो-दो पारी खेलने के बाद भी मैच ड्रॉ हो जाते थे। तब जीवन ठहरा हुआ था। किसी को कोई जल्दी नहीं थी। मैदान पर मैच देखने वालों को भी नहीं और देश के कोने-कोने में कानों पर ट्रांज़िस्टर लगाए कॉमेंट्री सुनने लाखों लोगों को भी। अब टीमें एक-एक बार बीस-बीस ओवर खेलती है और मैच का फैसला हो जाता है।

सफेद कपड़ों और लाल गेंद का स्थान रंगीन कपड़ों, फ्लड-लाइट्स और सफेद गेंद द्वारा ले लिए जाने के बाद क्रिकेट के दर्शकों का इस खेल का अनुभव पूरी तरह बदल गया है। फ्लड-लाइट्स से संभव हुए डे-नाइट मैचों ने टेस्ट क्रिकेट शेड्यूल में भी क्रांति ला दी, जिससे मैदान पर दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ने के इंतजाम हुए और वैश्विक टेलीविजन दर्शक उस ओर आकर्षित हुए। निजी मुनाफे के प्रसारणकर्ताओं ने क्रिकेट को टेलीविजन-अनुकूल खेल के रूप में पहचान बना दी। कलात्मक क्रिकेट के खेल को एक तमाशे में परिवर्तित कर दिया गया जिससे कि उसके टीवी प्रसारण अधिकार बेच कर मुनाफा कमाया जा सके। यह मुनाफा क्रिकेट के खेल से नहीं बल्कि टीवी प्रसारणों के दौरान बीच में दिखाये जाने वाले विज्ञापनों से तथा उसकी अन्य फ्रैंचाइजी बेच कर कमाया जाता है। इसकी शुरुआत इस मासूम दावे के साथ हुई थी कि टीवी प्रसारण से क्रिकेट आम जनता तक पंहुचाया जाएगा जिसमें भौगोलिक सीमाएं भी नहीं होगी। आज टेलीविज़न खेल के रूप में क्रिकेट की अपार लोकप्रियता है, जिससे इसकी पहुंच और राजस्व प्रवाह में अथाह वृद्धि हुई है और क्रिकेट संगठन सबसे अमीर संगठन बन गये हैं। 'वर्ल्ड सीरीज़ क्रिकेट' के मनोरंजन-उन्मुख क्रिकेट मॉडल ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) और बाद की टी20 लीगों के लिए आधार तैयार किया। पैकर के विज़न ने साबित कर दिया कि क्रिकेट एक रोमांचक खेल और एक आकर्षक व्यवसाय दोनों हो सकता है। पैकर की सफलता ने दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। 'वर्ल्ड सीरीज़ क्रिकेट' में विभिन्न देशों के खिलाड़ियों वाली टीमें शामिल थीं, जिससे देशों की पारंपरिक सीमाएं मिट गईं। क्रिकेट अब बाज़ार के लिए खेला जाता है जिनमें सटोरिये भी शामिल होते हैं। प्रायोजकों के लोगो के साथ खिलाड़ियों की ब्रांडिंग से खेल विपणन में भी क्रांति आई है। क्रिकेट अधिकारियों के साथ पैकर की लड़ाई से महत्वपूर्ण संस्थागत परिवर्तन भी आया। कानूनी टकरावों के बाद अंततः समझौते हुए जिनसे पैकर के नवाचार पारंपरिक क्रिकेट संरचनाओं में समाहित कर लिए गये। इस बदलाव के समर्थक कहते हैंकि इसने नवाचार की शक्ति और बदलते समय के साथ अनुकूलन की अनिवार्यता प्रदर्शित होती है। पैकर के ज़माने में डिजिटल युग शुरू नहीं हुआ था, किन्तु यह सभी मानते हैं कि टेलीविजन से परे दर्शकों को जोड़ने के लिए क्रिकेट में डिजिटल परिवर्तन की नींव भी रखी गई। आज, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म दर्शकों के जुड़ाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे क्रिकेट की वैश्विक अपील और बढ़ जाती है। क्रिकेट में इस बदलाव ने प्रदर्शित किया कि परंपराएं और आधुनिकीकरण साथ-साथ चल सकते हैं। क्रिकेट प्रशासकों को बदलते परिदृश्य के अनुकूल अपने को ढालने के लिए मजबूर होना पड़ा। केरी पैकर क्रांति की स्थायी विरासतों में से एक हैं क्रिकेट का आधुनिक व्यावसायीकरण। क्रिकेट अब एक फलता-फूलता आकर्षक व्यवसायिक उद्यम बन गया है, जिसके कारण विज्ञापन और प्रायोजन को नया बाज़ार मिला है जिसमें प्रायोजकों के 'लोगो' के साथ खिलाड़ियों की ब्रांडिंग भी होती है। यह व्यापक व्यावसायिक साझेदारी अब खेल के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न हिस्सा है। 'वर्ल्ड सीरीज़ क्रिकेट' ने डिजिटल युग के लिए एक पुल का काम भी किया। पैकर की दूरदर्शिता टेलीविजन स्क्रीन की सीमाओं से आगे की थी, उसने क्रिकेट कवरेज के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म की क्षमता को पहचाना था। 1970 के दशक के आखिर में जब इंटरनेट तब अपनी प्रारंभिक अवस्था में था, तब पैकर ने पारंपरिक माध्यमों से परे दर्शकों को जोड़ने पर जोर दिया, जिसने डिजिटल क्रांति की नींव रखी, जिससे बाद में क्रिकेट के उपभोग के तरीके बदल गये। उस दौरान शुरू किए गए सिद्धांत और नवाचार न केवल समय की कसौटी पर खरे उतरे, बल्कि आधुनिक क्रिकेट के लिए आधार भी बने हैं। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल), बिग बैश लीग (बीबीएल) और अन्य टी20 लीग के अस्तित्व का श्रेय स्वाभाविक हीपैकर की दूरगामी सोच को दिया जा सकता है। उसने दिखाया कि क्रिकेट का खेल एक सफल व्यवसाय भी हो सकता है। क्रिकेट में ऐसे बदलावों के आलोचक भी कम नहीं रहे हैं। परंपरावादियों ने इन बदलावों की निंदा की और उन्हें खेल की पवित्रता को नष्ट करने के रूप में देखा। आलोचकों का तर्क था कि क्रिकेट को वस्तु के रूप में पेश किया जा रहा है और लाभ के लिए इसके अंतर्निहित मूल्यों को छीना जा रहा है। ये चिंताएं बहुत हद तक तक वैध थीं, लेकिन नयी क्रांति की आंधी में सारे प्रतिरोध धराशायी हो गये।

क्रिकेट अब एक फलता-फूलता आकर्षक व्यवसायिक उद्यम बन गया है, जिसके कारण विज्ञापन और प्रायोजन को नया बाज़ार मिला है जिसमें प्रायोजकों के 'लोगो' के साथ खिलाड़ियों की ब्रांडिंग भी होती है। यह व्यापक व्यावसायिक साझेदारी अब खेल के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न हिस्सा है।

विश्व में खुली पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं के उभार और क्रिकेट में बदलाव के बीच रिश्ते का अध्ययन भी दिलचस्प होगा। संभव है आने वाले समय में शिक्षा के उच्च संस्थानों में से किसी का ध्यान इस तरफ जाए और इसकी खोज के लिए अकादमिक अध्ययन हो ताकि इस बदलाव को गहरे से समझा जा सके। इस बदलाव ने क्रिकेट में ही नहीं खेलों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लाने का काम किया है। इसने परंपराओं को तोडा है, यथास्थिति को चुनौती दी है और व्यावसायिकता, नवाचार और वित्तीय समृद्धि के युग की शुरुआत की। क्रिकेट के खेल को वैश्विक तमाशा बनने की कहानी का यह भी संदेश है कि, पनपने के लिए, परंपराओं को बदलते समय के अनुरूप अपने को अनुकूलित करना होता है। लेकिन ऐसा सोचने वाले भी हैं कि जैसे फैशन में पुरानी चीज़ें लौटती हैं, वैसे ही क्रिकेट में भी एक समय पर लोग फिर से 'क्लासिक स्टाइल' को अपनाना शुरू कर सकते हैं। दर्शकों की नॉस्टैल्जिया की भूख इसमें मदद कर सकती है। मगर आज के युवा के पास यह नॉस्टैल्जिया नहीं है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

इतिहास खोदोगे तो मोती और कीचड़ दोनों निकलेंगे

महावीर सिंह

फरवरी, मार्च 2025 के महिने इतिहास के नाम पर भरपूर मनोरंजन के रहे। संभाल में पौराणिक काल के मंदिरों के लिए खुदाई चालू है। औरंगजेब की कब्र खुदते-खुदते बची है। बाबर और राणा सांगा का युद्ध पुनः लड़ा जा रहा है। अकबर के साथ साथ राजा मान सिंह, मिर्जा राजा जयसिंह व कई अन्य अकबर, औरंगजेब के समकालीन राजाओं की जबरदस्त धुनाई चल रही है। जिन्हें इतिहास का तनिक भी बोध नही, वो इतिहासवेत्ता बनकर मनोरंजन कर रहे हैं। अर्ध शिक्षित तथाकथित राजनेता व विद्रूप से लगने वाले दो बड़े धर्मों के धर्माचार्यों व तथाकथित सांस्कृतिक संगठनों के झंडाबरदारों ने एक-दूसरे पर चिल्लपो करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। टीवी वालों नें भी इनकी मुर्गा लड़ाई कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आखिर 24ँ7 चलने वाले चैनल्स उचित मानदंड वाली कितनी क सामग्री दिखा सकते है? उनकी भी मजबूरी है, धन एकत्रित करने के लिए, विभिन्न धार्मिक राजनीतिक आकाओं, धनदाताओं की इच्छयाओं का मान, जो रखना पड़ता है।

आगे बढ़ने से पहले कुछ प्रसिद्ध इतिहासकारों के इतिहास के सम्बन्ध में विचार जानना ठीक होगा। रोमिला थापर के अनुसार इतिहास अतीत की समझ व व्याख्या है। उनके अनुसार अतीत की यह समझ किसी की धारणाओं के, पूर्वाग्रहों,वर्तमानं परिपेक्ष के अनुसार नही होनी चाहिए। ई एच कार के अनुसार बिना जड़ (तथ्यों) के इतिहास व्यर्थ सामग्री है। इतिहासकार अतीत के तथ्यों को सजीवता प्रदान करता है। आर सी मजूमदार का मानना है कि इतिहास केवल प्रसिद्ध हस्तियों पर केंद्रित न हो। इरफान हबीब के अनुसार किताबें बदलने से या किसी के पूर्वाग्रहों से इतिहास नही बदलता। जवाहर लाल नेहरू के अनुसार इतिहास मनुष्य की बर्बरता से सभ्यता तक कि यात्रा है। वर्तमानं को समझने और भविष्य को गढने का साधन है। हेगेल के अनुसार इतिहास स्वतंत्रता की चेतना की प्रगति है। इतिहास वह मिट्टी नही जहां खुशियां उगती हों। खुशियों के दौर इतिहास के कोरे पने हैं। इतिहास अतीत की घटनाओं के कार्य-कारण की जांच करता है--ऐसा किन कारणों से क्यों हुआ, उसके प्रभाव क्या रहे आदि-आदि।

इतिहास को दो भागों में बांट कर देखें तो एक भाग है सम्राटों, राजाओं, सामंतों का, उनकी रानियों, दरबारियों, राज पुरोहित व धार्मिक उच्चाधिकारियों की कहानियों का, अधिकारों का व उनके स्वार्थों, युद्धों का। दूसरा भाग है तत्कालीन समाजों के गठन, सामान्य मनुष्यों का वर्गीकरण, उनके माली हालातों का-उनके अधिकारों-दायित्वों व शोषण का- राज की ओर से उपलब्ध कराई गई सार्वजनिक सुविधाओं आदि का। इस प्रकार से इतिहास लिखने वालों को वाम पंथी कह कर, आजकल उनकी भी काफी मौखिक धुनाई टीवी चैनल्स पर होती है।

मुगल, भारत आने वाले कोई पहले विदेशी आक्रमणकारी या अपवाद नहीं थे। भारत पर प्राचीन काल से विदेशी आक्रमणकारियों के हमले होते रहे हैं। भारत की गंगा, यमुना व सिंधु घाटी की नदियों की सरसब्ज भूमि व फसलों के अनुकूल मौसम ने सदैव से ही बाहरी जनजातियों, कबीलों को आकर्षित किया है। ज्ञात इतिहास के अनुसार ईरान के राजा साइरस द्वितीय व डोरिअस प्रथम नें क्रमशः 550 व 518 ईसवी पूर्व आक्रमण किए। ईरानी शासकों नें उस समय के पश्चिमोत्तर भारत की राजनीतिक विश्रृंखलता का लाभ उठाया। इन क्षेत्रों के, तत्समय के सारे राजा अलग-अलग युद्ध कर हारे, अधीन हुए या राज्य खोए। सामूहिक रूप से युद्ध नहीं किया। गंधार, काबुल, बलूचिस्तान, हिंदुकुश पर्वत तक, सिंधु घाटी का क्षेत्र ईरानी साम्राज्य का भाग बन गया। शिक्षा का विश्वप्रसिद्ध केंद्र तक्षशिला, व्यापारिक महत्व का वर्तमानं पेशावर आदि शहर ईरानी अधिपत्य में थे।

ईरानी आक्रमणों के बाद मेसिडोनीइया के राजा अलेक्जेंडर (सिकन्दर) नें युनान, ईरान व रास्ते के समस्त राज्यों को परास्त कर, 326 इसवी पूर्व में भारत के उतरी, पश्चमी राज्यों पर आक्रमण किए। उसने पंजाब क्षेत्र में स्थित शक्तिशाली राजा पोरस, काश्मीर के राजा अभिसार को परास्त किया। गांधार जो वर्तमान पाकिस्तान के क्षेत्र में स्थित था उसके राजा को हराया। पंजाब, हरयाणा, राजस्थान क्षेत्र के कुछ अन्य राजाओं को हराया। अधीनता मानली उन्हें अपना क्षत्रप बना दिया। इन सब अपने अपने स्वार्थों, मतभेदों के कारण अलग-अलग लड़े और हारे। इन आक्रमणकारियों के अलावा, भारत में शक, कुषाण, हूण, तुर्क, मंगोल, अरब, अंग्रेज आदि अन्य विदेशी आक्रमणकारी भी। किन्तु कहानी कमोबेश सब की एक ही थी--उस समय के छोटे-छोटे राज्यों के राजाओं के अपने-अपने स्वार्थ थे, महत्वकांक्षाओं, प्रतिस्पर्धाओं, इर्ष्याओं के कारण अलग-अलग लड़ते रहे और हारते रहे।

मौर्य साम्राज्य के कमजोर होने के बाद, शक या ईरानी-सीथियन मूल के जनजातीय लोग मध्य एशिया व युरोसियन घास के मैदानों से भारत आए थे। उनके आगमन का समय ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के आसपास माना जाता है। भारतीय राजाओं ने खानाबदोश शकों के खिलाफ सामूहिक रूप से युद्ध नहीं किया। विभिन्न राज्यों ने शकों के खिलाफ अलग-अलग तरीके से प्रतिक्रिया दी। सात वाहन शासकों ने अवश्य शकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन्हें नर्मदा नदी से आगे नहीं बढ़ने दिया।

शकों के बाद उतरपश्चमी चीन व उज्बेकिस्तान क्षेत्र से कुषाण (काल 30 ईशा बाद से 375 ईसवी तक) भारत में आए। कुषाण शासकों ने शकों को पराजित किया। उनके कई क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में शामिल किया। पेशावर, मथुरा उनके समय के प्रमुख नगर रहे। कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया। गांधार व मथुरा कला शैलियां उन्ही के काल में विकसित हुई। यहां की संस्कृति, धर्म पर काफी प्रभाव डाला। कुषाणों नें बौद्ध धर्म अपनाया और संरक्षण दिया। कुषाणों के प्रमुख शासकों में कनिष्क, विमा कडफिस और कुजुला कडफिस शामिल थे। कनिष्क नें कश्मीर में 72 ईस्वी में चौथी बौद्ध परिषद का आयोजन। शकों पर विजय की यादगार में, ईसवी वर्ष 78 में शक संवत चलाया, जो काल गणना के लिए भारत का सरकारी कलेंडर है। विमा कडफिस ने भारत में सोने के सिक्कों का प्रचलन किया।

5वी शताब्दी ईस्वी में, मध्य एशिया की ओर हूणों नें भारत पर आक्रमण किया। गुप्त साम्राज्य के राजाओं नें नें प्रारंभिक काल में इनका सामना किया किन्तु इनके आक्रमणों नें गुप्त साम्राज्य को छिन्न-भिन्न शक्तिहीन कर दिया। हूणों नें भारत के कई हिस्सों पर शासन किया। 8वी शताब्दी ईस्वी में इस्लामी धर्म मान ने वाले, अरब लोगों ने मोहमद बिन कासिम की अगुवाई में सिंध पर आक्रमण किया। अपना राज्य स्थापित किया। इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया। 1005 से 1026 के बीच तुर्क शासक मोहमद गजनवी नें भारत पर 17 हमले किए थे। उनके हमलों का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति और संसाधनों को लूटना था। उन्होंने कई भारतीय राजाओं को परास्त किया। जयपाल, उसके पुत्र आनन्दपाल को पराजित किया। वर्ष 1021 में कनौज पर भी आक्रमण कर वहां के राजा को पराजित किया। 1025 में प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर को लूटा था। पंजाब, मुल्तान को गजनवी साम्राज्य का हिस्सा बनाया। गजनवी के हमलों नें भारत में इस्लामी शासन की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किन्तु उसने इस्लाम को थोपने के प्रयास नहीं किए।

मोहम्मद गौरी ने भारत के छोटे-छोटे राजाओं की आपसी ईर्ष्या, मिथ्या अहंकारों को पहचाना। इनका फायदा उठाकर उनको पराजित किया। सबसे पहले पंजाब पर कब्जा कर लिया। आईने अकबरी की कहानी के अनुसार, कनौज के जयचंद ने भी दिल्ली-अजमेर के राजा पृथ्वी राज के विरुद्ध सहायता के लिए मोहम्मद गौरी से सहायता ली किन्तु इसके अलावा उसका कोई प्रमाण समकालिक लेखन में नहीं मिलता। लोक कविता, कहानियों में जरूर संयोगिता स्वंयम्बर का उल्लेख होता आया है। गौरी नें दिल्ली-अजमेर के शासक पृथ्वी राज से 1191 में हारकर, फिर 1192 में तराइन की दूसरी लड़ाई में, पृथ्वीराज को परास्त किया। आंतरिक मतभेदों के चलते पृथ्वीराज चौहान को भारतीय राजाओं से गौरी के विरुद्ध अपेक्षित सहायता नही मिली। चंदावर के युद्ध में जयचंद को हराकर, कन्नौज राज्य को भी हथिया लिया। उसने भारत के कई हिस्सों पर अपने सूबेदारों के जरिए शासन किया। गौरी नें भारत में सल्तनत स्थापित की। उसने आने गुलाम कुतुब्दीन एबक को दिल्ली का सुल्तान बनाया। 15 मार्च 1206 को झेलम नदी के किनारे खोखर जाटों के कबीलाई लोगों ने उसकी हत्या कर दी। मुगल 16वीं शताब्दी ईस्वी में भारत आए और उन्होंने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया। उनके प्रमुख शासकों में बाबर, हुमायूं, अकबर और शाहजहां शामिल थे।

बाबर 1519 से ही अपने घुड़सवारों के साथ भारत पर हमले कर रहा था। पंजाब में कुछ-कुछ स्थानों जैसे बाजोर, भीरा में पैर जमा चुका था। 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई हुई, जिसमें उसने दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराया। इतिहासकारों के भिन्न-भिन्न मत है कि लोदी के विरुद्ध कौन-कौन भारतीय राजा बाबर के सहायक थे। बाबर-राणा सांगा के खानवा युद्ध को लेकर वर्तमानं में कटु-अमर्यादित वाक युद्ध चालू है, उसको निष्पक्ष तरीके से देखा जाए तो निश्चितत: राणा सांगा अत्यंत बहादुरी से लड़े किन्तु वे हारे। राणा सांगा के साथ कुछ राजपूत राजा व दौलत खान आदि थे। दौलत खान को आशा थी बाबर उसकी सहायता कर वापिस लौट जाएगा किन्तु पानीपत के पहले युद्ध नें पाशा ही पलट दिया। वह तो भारत में जम गया। 15 मार्च 1527 का खानवा का युद्ध तलवार, भाले से युद्ध वाली शूरवीरता का युद्ध था ही नहीं। यह बारूद को उपयोग में लेने वाले तोप-बंदूकों से व तेज गति से दोड़ने वाले घोड़ों से लड़ा गया युद्ध था।

प्रश्न तो यह पूछने चाहिए कि भारतीय राजाओं के पास तोपें, बंदूकें क्यों नहीं थी? तत्समय के भारत के कोन कोन से राजा, राणा सांगा के साथ लड़े और कौन बाबर के सहयोगी या उदासीन रहे। बाबर जीत में उसका नेतृत्व कौशल भी था। उसने अपने सैनिकों के उत्साह हवर्धन करने के लिए, युद्ध क्षेत्र में शराब त्याग की घोषणा की।

18वीं शताब्दी ईस्वी में अंग्रेज भारत आए और उन्होंने भारत में अपना शासन स्थापित किया। उन्होंने भारत को अपनी उपनिवेश बनाया और 1947 तक शासन किया। इन सभी विदेशी ताकतों और शासकों ने भारत की संस्कृति, राजनीति और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है। अगर हम इतिहास की मन की इच्छानुसार व्याख्या न करके, उस से सीखना चाहते है तो उन कमियों का विश्लेषण होना चाहिए जिनके चलते एक बाद एक विदेशी ताकतें आती रही और स्थानीय राजाओं को हराती रही।

इतिहास में तो अशोक महान के साथ चण्ड अशोक को भी पढ़ना पड़ेगा--एक अत्याचारी, बर्बर अशोक जो बौद्ध धर्म अपना कर विश्व विख्यात अशोक महान बना--आप पर निर्भर करेंगा, आप इन में से किसे अपना आदर्श बनाएंगे?? हर्ष नें बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया किन्तु कुम्भ के मेले में अप्रिय घटनाएं हुई और बौद्धों का निष्क्रमण हुआ। यदि छुद्र मानसिकता का ही प्रदर्शन करना हो तो इस पर भी लड़ जा सकता है कि कुम्भ, राजा हर्षवर्धन के समय शुरू हुआ या आदि शंकराचार्य नें शुरू किया या यह समुद्रमंथन से जुड़ा हुआ है?? जजिया के नाम लड़ लो या टोडरमल के द्वारा किए भूमापन के क्रांतिकारी कदम की प्रशंसा कर लो। मुगलों के हरम पर बवाल मचा लो या फिर अकबार की धार्मिक सहिष्णुता में कुछ अच्छा देख लो। मुगलों के हरम में तो तत्कालीन कई राज्यों की राजकुमारियां थी। यह कोई अचंभे की बात भी नहीं। विश्वभर में कूटनीतिक आधार पर, राजपरिवारों में वैवाहिक सम्बन्ध होते रहे है। इसमें भारतीय राजाओं के राज्यों की और मुगल साम्राज्य, दोनों के हितो की पूर्ति हो रही थी। निश्चित: औरंगजेब एक क्रूर, अत्याचारी शासक था, इतिहास में इस पर बहुत कुछ लिखा है, कोई भी पढ़ सकता है तो फिर अब क्या बबाल??

1950 से पहले भारत नाम की कोई राजनीतिक इकाई नहीं थी। गरीब, मजदूर, आम आदमी के अधिकार देने वाले और उनके संरक्षण के दायित्व तय करने वाला संवैधानिक राष्ट्र जैसा है वैसा भारत कभी नहीं था। हिमालय के दक्षिण में समुद्र तटों से घिरे भारत नाम के भौगोलिक भूभाग में अपवादों को छोड़कर, अनेकों छोटे-छोटे अत्याचारी, स्वेच्छाचारी, जनता का शोषण करने वाले शासकों के राज्य थे। यह अपने व्यक्तिगत लाभ-हानि-विद्वेषों के चलते लड़ते-भिड़ते रहते थे। इस लड़ने-भिड़ने में जनता का क्या हित था? जनता का तो अहित ही अहित था। शायद की किसी राजा के शासन में सार्वजनिक शिक्षा, उपचार की उचित व्यवस्थाएँ थी?? अशोक महान जैसे अपवाद तो गिने-चुने ही रहे हैं। स्वघोषित राष्ट्रवादी संगठनों द्वारा अशोक-हर्ष-अकबर-कई दूसरे अच्छे शासकों को आदर्श के रूप में क्यों नही प्रस्तुत किया जाता? गिने-चुने दो-चार राजाओं के चारों तरफ हिन्दू-मुसलमान करते रहते हैं।

इतिहास की दृष्टि से देखे तो, मध्य कालीन भारतीय समाज में जन्म से जाती, अस्पर्शयता, सतीप्रथा, दलितों के साथ अत्याचार, गैरबराबरी, शिक्षा पर एक छोटे से समूह का अधिकार व कुछ जातियों की शिक्षा तक पहुंच ही वर्जित, कर्म से कौशल के स्थान पर अनावश्यक पाखंडों जैसी बुराईयों पर कोई जन आंदोलन शायद भी हुआ?

भारत की जितनी आर्थिक लूट अंग्रेजों ने की उतनी किसी नें नही की। आर्थिक विषयों के जानकारों का मानना है कि मुगल काल में तो अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत की बहुत बड़ी हिस्सेदारी थी।

ऐतिहासिक दृष्टि से धर्मांतरण विचार करें तो चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म, अशोक-कनिष्क-हर्ष नें बौद्ध धर्म क्यो अपनाया? शायद उनको तत्समय के हिन्दू धर्म में बहुत कुछ अनावश्यक लगा होगा। अब तो सनातन गांव से लेकर सनातन राष्ट्र तक की घोषणाएं ही रही है। वैसे सनातन है क्या--वैदिक धर्म या पौराणिक धर्म या फिर कुछ ओर? आम आदमी को बड़ी कुर्बानियों के बाद, उसे अधिकार को देने वाला, उनका संरक्षण करने वाला, आज का संवैधानिक भारत मिला है। आज, जी-जान से उसकी रक्षा ही राष्ट्र धर्म है बाकी सब वर्चस्व व वोट के लिए स्वांग मात्र है।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

दक्षिण-पश्चिम कमान ने जयपुर में अपना 21वां स्थापना दिवस मनाया

जयुपर। 15 अप्रैल 2005 को स्थापित हुई सप्त शक्ति कमान ने जयपुर में अपना 21वां स्थापना दिवस मनाया। सप्त शक्ति कमान भारतीय सेना की सातवीं और सबसे युवा कमान है। पिछले 21 वर्षों में सप्त शक्ति कमान ने सफलता की ऊंचाइयों को छूते हुए पश्चिमी सीमाओं पर मज़बूत सुरक्षा स्थापित की है।

सर्वदा विजयी भव के आदर्श के साथ इस कमान ने न केवल देश की सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि ऑपरेशनल प्रिपेयर्डनेस और प्रोफेशनल एक्सीलेंस के उच्चतम मानकों को भी प्राप्त किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि सुदृढ़ प्रशिक्षण, नवीन तकनीकों को शामिल करने तथा नवीन तकनीकी एवं सामरिक प्रक्रियाओं के विकास से संभव हुई है। इन्हीं प्रयासों से, यह कमान भविष्य के युद्धक्षेत्र की चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपटने के लिए एक फ्यूचर-रेडी, टेक्नोलॉजी-ड्रिवन, लीथल और एजाइल फोर्स के रूप में उभरी है। स्थापना दिवस के अवसर पर प्रेरणा स्थल पर श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश की सेवा में अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर सैनिकों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। यह आयोजन कमान की मूल भावना में निहित वीरता और निःस्वार्थता का एक मार्मिक स्मरण था।

स्थापना दिवस पर प्रेरणा स्थल पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई।

इस अवसर पर, लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह, आर्मी कमांडर, सप्त शक्ति कमान ने सभी रैंकों, पूर्व सैनिकों, रक्षा कर्मचारियों और उनके परिवारों को शुभकामनाएं और बधाई दी।

■ **सप्त शक्ति कमान भारतीय सेना की सातवीं और सबसे युवा कमान है**

उन्होंने कमान की इस गौरवशाली यात्रा में योगदान देने वाले सभी भूतपूर्व और वर्तमान सैनिकों के निस्वार्थ समर्पण, साहस और बलिदान की सराहना की। उन्होंने भारतीय सेना की सबसे युवा कमान को इतने कम समय में विशिष्ट पहचान, गौरवपूर्ण विरासत स्थापित करने तथा सफलता के शिखर पर पहुँचाने में उनके अहम योगदान को सराहा। अपने संबोधन में आर्मी कमांडर ने कहा कि कमान ने सेना की दूरदृष्टि के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए, नई रणनीतियों को अपनाकर और मल्टी-डोमेन ऑपरेशनों के समन्वय के माध्यम से अपनी ऑपरेशनल प्रिपेयर्डनेस को सशक्त बनाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने नई तकनीकों के समावेश की आवश्यकता पर बल देते हुए कमान द्वारा किए गए प्रयासों एवं इंफ्रास्टक्चर डेवलपमेंट से जुड़ी विभिन्न पहलों को रेखांकित किया।

आर्मी कमांडर ने कहा कि वेटरन्स और वीर नारियां कमान की निरंतर प्रेरणा और शक्ति रही हैं और उनका वेलफेयर कमान की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने उनके कल्याण एवं सशक्तिकरण हेतु अब तक की गई पहलों तथा भविष्य में प्रस्तावित योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। आर्मी कमांडर ने कमान के प्रत्येक सदस्य से राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा हेतु स्वयं को पुनः समर्पित करने का आव्हान किया और नई चुनौतियों का अद्वितीय व्यावसायिकता एवं साहस के साथ सामना करने का संदेश दिया। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे एक साथ मिलकर, एक ही उद्देश्य और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें तथा हमारे लोकतंत्र की नींव को मजबूत करें और कमान के आदर्श-सर्वदा विजयी भव का दृढ़ता से पालन करें।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 अप्रैल, 2025

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधा नक्षत्र गुरूवार प्रातः 5:55 तक, व्यतिपात योग रात्रि 12:18 तक, विष्टि करण दिन 1:18 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मे